कैरली

2020-21

കൈരളിKairali



केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान आयुक्त का कार्यालय ,कोच्चि

OFFICE OF THE PRINCIPAL COMMISSIONER OF CENTRAL TAX & CENTRAL EXCISE, KOCHI

केंद्रीय राजस्व भवन /C.R.BUILDING आई एस प्रेस रोड I.S.PRESS ROAD, कोचिन /COCHIN-682018

कैरली

केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय,कोच्चि
आई.एस. प्रेस रोड,कोच्चि -18 की
त्रिभाषी गृह पत्रिका



Kairali

Trilingual Departmental Magazine of
Central Tax & Central Excise Commissionerate, Kochi
C.R.Building, I.S.Press Road, Cochin-18

.....

विभागीय गृह पत्रिका वर्ष 2020-21

.....

प्रधान संपादक	श्री के. आर. उदय. भास्कर,केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान आयुक्त
प्रबंध संपादक	डॉ अजितेश राधाकृष्णन, संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी
संपादक(अंग्रेज़ी व् मलयालम रचनाएं)	श्री एस सुरेश, सहायक आयुक्त (राजभाषा)
संपादक	श्रीमती रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

ई -पत्रिका के लिए तकनीकी सहायक - श्री आदर्श के दास, निरीक्षक, मुख्यालय

.....

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, इनमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है ।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकर	पृष्ठ सं.
1	चित्र कला	निष्का सिंह, सुपुत्री श्री शशिकांत सिंह,निरीक्षक	2
2	चित्र कला	अरुण कुमार ए	3
3	संरक्षक के संदेश	मुख्य आयुक्त	4
4	प्रधान सपादक की कलम से	प्रधान आयुक्त	5
5	संदेश	संयुक्त आयुक्त (का. व सत.)	6
6	संपादकीय	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	7
7	सफ़र	सुभांशु दत्ता	8-9
8	सोशल मीडिया पर लगाम	संजीव कुमार	10-12
9	बेवजह सी वजह	किरण शर्मा	13
10	एक नज़र भारतीय संस्कृति की ओर	राजभाषा अनुभाग	14-16
11	कितनी परतें	किरण शर्मा	17-18
12	मातृ - छाया	बालकिशन	19
13	कोरोना काल के कुछ नए शौक और रुचियाँ	रोसेलिंड जोस कोरुत	20-22
14	नारी	रीमा सोलंकी	23
15	घर से दूर	मोहित कुंद्रा	24-25
16	फोटो -स्वतंत्रता दिवस 2020 , जी एस टी दिवस 2020 ,हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2020 , प्रधान मंत्री का जन आन्धोलन अभियान 2020 ,गणतंत्र दिवस 2021 ,महिला दिवस 2021, होली 2021 , आज़ादी का अमृत महोत्सव 2021		26-35
17	**The COVID Paradox**	**Dr. Ajitesh Radhakrishnan**	36-38
18	**The Ambush**	**Subhanshu Dutta**	39
19	**The tree of life, An apology**	**Gayathri K.K**	40-41
20	**Work from Home**	**Bhaskarnath**	42-43
21	**Drawings**	**Shauryaman**	44
22	നീ, ഞാൻ, പിന്നെ നമ്മൾ	അരുൺ കുമാർ	45-47
23	രാവ് പൂക്കുമ്പോൾ	ഹാബ്ബി ഷീബൻ	48
24	കൊഫെപോസ എന്നാലെന്താണ്?	എം.ആർ.രാമചന്ദ്രൻ	49-51
25	जापानी कार्टून चित्रकला **Japanese Cartoon Art**	**Anupama Susan Koruth**	52



संरक्षक के संदेश



कोच्चि आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका "कैरली" प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य है हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना। इस पत्रिका में हिन्दी के अलावा मलयालम एवं अंग्रेज़ी के लेख भी शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सबको मनोरंजक प्रतीत होगा और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा ।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति के लिए मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को शुभकामनाएं देता हूं ।

श्याम राज प्रसाद, भा.रा.से.

मुख्य आयुक्त

प्रधान सपादक की कलम से



केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, कोच्चि की विभागीय पत्रिका "कैरली" आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है ।

राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो सके, यह हम सबकी प्रतिबद्धता और दायित्व है । इस आयुक्तालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि वे राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए अपने कार्य में इसका अत्यधिक प्रयोग करें ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े हुए सभी अधिकारीगण जिन्होंने पत्रिका को आप तक पहूंचाने में अथक परिश्रम किया है, वे धन्यवाद के पात्र हैं।

उदय भास्कर

के आर उदय भास्कर, भा.रा.से.

प्रधान आयुक्त

संदेश



मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, कोच्चि आयुक्तालय की पत्रिका "कैरली" का प्रकाशन किया जा रहा है । राजभाषा हिन्दी का प्रचार - प्रसार करने और उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि में पत्रिका का प्रकाशन एक अभिन्न अंश साबित होती है । पत्रिका प्रकाशन में अधिकारियों के साथ - साथ अपने परिवार के सदस्यों ने भी अपनी बहुमूल्य रचनाएं देकर इसे और समृद्ध बनाया है ।

मैं "कैरली" के प्रकाशन में जुड़े हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाइयां देता हूं,साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं ।

अजितेश।

डॉ अजितेश राधाकृष्णन, भा.रा.से.

संयुक्त आयुक्त[का. व सत.] व राजभाषा अधिकारी

संपादकीय



"भाषा वह साधन है, जिससे हम अपने मन के भाव दूसरों पर प्रकट करते हैं ।"

भारत में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं । इन भाषाओं में हिन्दी एकता की कड़ी है । हमारे संतों,समाज सुधारकों और राष्ट्र नायकों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए हिन्दी को अपनाया,क्योंकि भारत में यही वह भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और राजस्थान के सुदूर पश्चिमी अंचल से असम के पूर्वी सीमावर्ती भू-भाग तक समान रूप से समझी जाती है ।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग 1000 वर्ष पहले हिन्दी का विकास अपभ्रंश से हुआ । वस्तुतः संस्कृत का पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से विकसित रूप ही हिन्दी है । इस एक हज़ार से भी अधिक वर्षों की अवधि में हिन्दी निरंतर विकसित होती गई है । प्राचीन काल में संस्कृत राजभाषा थी । अशोक के शिलालेख पालि और प्राकृत में लिखे गए हैं । आचार्य कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राजपत्र और राजभाषा पर विस्तारपूर्वक महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं । उनकी मान्यता है कि शासन की भाषा में अर्थक्रम,संबंध, माधुर्य, औदार्य और स्पष्टता का होना नितांत आवश्यक है । इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष में प्राचीन काल में राजभाषा और राजपत्रों के संबंध में विचार-विमर्श होता रहा है ।

स्वतन्त्रता मिलने के बाद भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 के दिन हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई । संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार ***"संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागिरी होगी ।"***

सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया एवं संप्रेषण करता है । राजभाषा हिंदी की प्रगति भी सूचना प्रौद्योगिकी से हो रही है ।

इस पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों और आलोचना से हमें अवश्य अवगत करायें,ताकि कैरली के आगामी अंक को और अधिक सुरुचिपूर्ण और उपयोगी बना कर आपके हाथों में सौंपा जा सके ।

रोसेलिन्ड जोस के

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सफ़र



सुभांशु दत्ता, निरीक्षक

पिंजरे से घरोंदे से जब
बाहर निकल के देखा
घिरा पाया हर रास्ता
हर इंसान को देखा भागता
किसी को है खबर
अपनी मंज़िलों की
तो रहता है
कोई हर शब लापता
कभी है जोश से भरा
तो अगले ही पल हांफता
मसरूफ है कभी
अपनी ही मौसीक़ी में
तो कभी दर्द
है अपने नापता
रास्तों पे दौड़ता इंसान
कभी खफ़ा है उसपे ख़ुदा
कभी है अल्लाह मेहरबान
आते जाते ही दिख जाती है
हर इंसान की तस्वीर
कुछ मिलते हैं
पैसे वाले फ़कीर
तो कुछ टकरा जाते हैं
खुशियों से अमीर
चलते रहना नहीं
आखिर में पहुँचना है मुश्क़िल
आगे बढ़ना नहीं

दूसरों से टकराने से
बचना है मुश्क़िल
ये ज़िन्दगी कि राह है
इसका बस वक़्त ही
होता है मुअक्किल
अकेले चलता है कोई
तो कोई लेता है
किसी का हाथ थाम
किसी के लिए
आगे बढ़ने का सहारा
उसका ख़ुदा है
तो किसी का साथ देता है
शराब से भरा हुआ जाम
कभी है चौड़ा रास्ता
कभी पतली पगडंडियाँ
कभी भीड़ का दरिया
कभी सुनसान बदरंगियाँ
होश सँभालने से
होश गंवाने तक
चलना ही तो है
वक़्त की आँधियों में
बदन की इस मट्टी को
ज़िन्दगी के इस सफ़र में
गलना ही तो है
किसी ने सही कहा है
चलते रहना ही
ज़िन्दगी जीने का नाम है
रुक जाना तो
मौत का ही अंजाम है

सोशल मीडिया पर लगाम



संजीव कुमार,निरीक्षक

आज-कल अब ऐसा देखा जा रहा हैं कि सोशल मीडिया अनियंत्रित होते जा रहा हैं क्योंकि सोशल मीडिया फ़ेक न्यूज़ का बड़ा माध्यम बन गया है। अब यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि कौन-सी खबर सच है और कौन-सी फर्जी, यहाँ तक कि इसके स्त्रोत का भी पता नहीं लग पाता। यह एक दुसरे से फॉरवर्ड होते हुए हम-आप तक पहुँच जाती है।फ़ेक न्यूज़ कि समस्या बढ़ने का सबसे मुख्य कारण इन्टरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या में दिन-प्रतिदिन तेजी से वृद्धि होना।अब लोग बिना जरुरतमंद के भी इन्टरनेट पर अपनी कीमती समय को बर्बाद कर रहे हैं | अधिक समय सोशल मीडिया पर व्यतीत करने से हमारे आँखों पर भी विपरीत प्रभाव डालती हैं एवं मानसिक शिकार से ग्रसित होते जा रहे हैं।

वेबसाइट स्टेटिस्टा के अनुसार , वर्ष 2020 तक भारत में लगभग 70 करोड़ लोग इन्टरनेट का इस्तेमाल कर रहे थे । दुनिया में इन्टरनेट का इस्तेमाल करने वाला सबसे ज्यादा लोग चीन के बाद भारत में ही है। अभी हाल ही के रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग व्हाट्सएप के 53 करोड़,यु-ट्यूब के 44 करोड़, फेसबुक के 41करोड़, इन्स्टाग्राम के 21 करोड़ और ट्विटर के 1.7 करोड़ से अधिक यूजर्स हैं.

केंद्र सरकार ने दिनांक 25.02.2021 को इन्टरनेट मीडिया और ओ. टी. टी.(Over The Top) प्लेटफ़ॉर्म के बारे में गाइडलाइन्स जारी की हैं।अब नेटफिलिक्स – अमेजन जैसी ओ टी टी प्लेटफ़ॉर्म हो या फेसबुक–ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म सबके लिए सख्त नियम बना दिया गया है। नए दिशा-निर्देशानुसार शिकायत के 24 घंटे के भीतर इन्टरनेट मीडिया से आपप्तिजनक सामग्री को हटानी पड़ेगी. इसके अलावा कंपनियों को एक शिकायत निवारण तंत्र और शिकायतों के निपटारा करने हेतु अधिकारी भी नियुक्त करना

पड़ेगा। शिकायत मिलने के 24 घंटे के अंदर उसे रजिस्टर्ड करना एवं 15 दिनों में उसका निपटारा भी करना हैं.

हालांकि आपात स्थिति में इन्टरनेट की सामग्री को ब्लॉक करने का प्रावधान वर्ष 2009 से ही आईटी मंत्रालय के सचिव के पास है वे पिछले 11 वर्षो से इसका उपयोग कर रहे है |{(सार्वजनिक लोगों द्वारा सूचना के उपयोग के लिए अवरुद्ध करने के लिए प्रक्रिया और सुरक्षा उपाय) नियम, 2009}. अभी अलग से कोई नया प्रावधान / नियम नहीं बनाया गया है सिर्फ इसे दिनांक 25.02.2021 को नयें दिशानिर्देशों में समाहित किया गया हैं।फ़ेक न्यूज़ से हमारे समाज में भ्रम एवं तनाव भी उत्पन्न हो रही हैं। सोशल मीडिया से हमें हमेशा ऐसे चीजें देखने को मिलती है. जो कि वास्तव में सच नहीं भी हो सकती हैं. जैसे कि अब GST Return फाईल करने की अंतिम तारीक को बढ़ा दी गयी है | एक दूसरी ऐसी भी मेसेज आती होगी जिसमे लिखा होगा है कि आप इस मेसेज को 11-21 लोगों को फॉरवर्ड करेंगे तो आप को 12-24घंटो के अंदर खुश खबरी मिल सकती है जो कि हमारे विचारों पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।तत्पश्चात सभी प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान एवं स्वयं के सम्बंधित संस्थान / विभाग को फ़ेक न्यूज़ का खंडन करना पड़ता हैं.

इस सम्बन्ध में कुछ वर्ष पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी केंद्र सरकार से कहा था कि सोशल मीडिया को लेकर दिशा-निर्देश कि सख्त जरुरत है ताकि भ्रामक जानकारी डालने वालों की पहचान आसानी से की जा सके। अदालत ने ये भी कहा था कि हालत ऐसे है कि हमारी निजता तक सुरक्षित नहीं हैं, जबकि निजता का संरक्षण सरकार की जिम्मेदारी हैं कोई किसी को ट्रोल क्यों करे और झूठी जानकारी क्यों फैलाये? इसके पहले बोम्बे हाई कोर्ट ने एक याचिका की सुनवाई के दौरान कहा था कि अभिव्यक्ति की आजादी की इस्तेमाल दो धार्मिक समुदायों के बीच नफरत का बीज बोने के लिए नहीं होना चाहिए, ख़ास तौर पर फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया पर पोस्ट करते समय इसका जरुर ख्याल रखा जाना चाहिए। लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का इस्तेमाल अनुशासित होकर करें ।

यह हम सबकी जिम्मेवारी है कि कोई भी सनसनीखेज या भ्रामक पैदा करने वाली खबर आये तो पहले उसकी गुणवत्ता की जाँच अवश्य कर लेना चाहिए जिसकी हम फ़ेक न्यूज़ का शिकार होने से बच सके एवं जितना आवश्यक हो उतना ही हमें इंटरनेट का इस्तेमाल करना चाहिए ।



Shauryaman, S/o Sanjeev Kumar, Inpsr

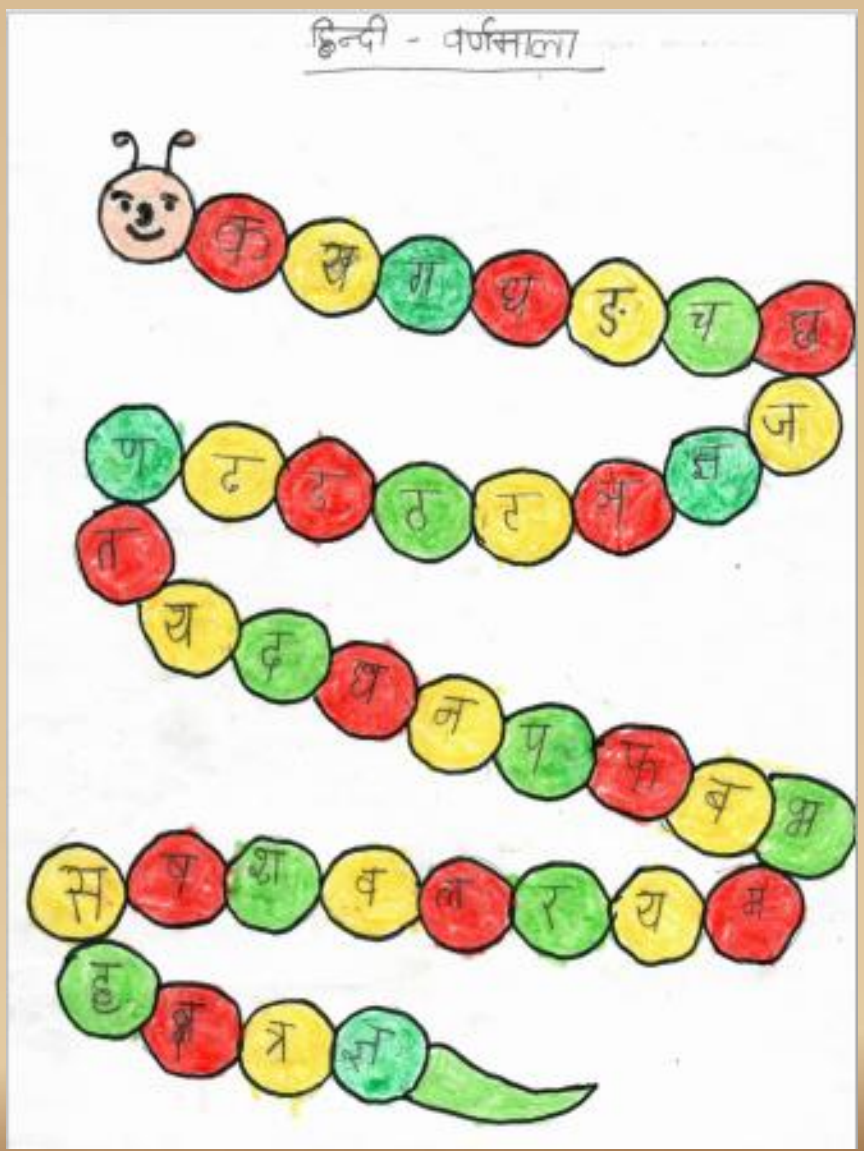

बेवजह सी वजह



किरण शर्मा, निरीक्षक

बेवजह सी एक वजह है,

तुम तक ठहर जाने की।

हर ख्वाहिश को भूल कर,

तुम्ही को मनाने की।

ज़माने को छोड़कर,

तुम्ही को आजमाने की।

लाखों की भीड़ में,

तुम्ही को पहचानने की।

दुनिया के शोर में,

तुम्ही को सुन पाने की।

बेवजह सी एक आदत पड़ गई है,

यूँही तुम्हे चाहने की।

बेवजह सी वो वजह ढूंढ रही हूँ,

एक बार फिर तुम्हे,

तुम्ही से चुराने की।

एक नज़र भारतीय संस्कृति की ओर -:

1. **अजंता :-**

महाराष्ट्र प्रदेश में औरंगाबाद नगर से 103 कि.मी.दूरी पर स्थित अजंता घाटी की गुफाएं अपने भित्ति - चित्रों के लिए विश्व -भर में प्रसिद्ध हैं | यहाँ पर्वत अर्धचंद्राकार है और नीचे बाधोरा नदी बहती है | यह स्थान किसी समय उत्तर - दक्षिण के व्यापार मार्ग पर स्थित था | यहाँ कुल 30 गुफाओं का पता चला है | ये सब बौद्ध गुफाएं हैं | इनका निर्माण काल 200 ई.पूर्व से लेकर 600 ई.सन् तक माना जाता है | यहाँ के चित्रों में मानव - जीवन, पशु -पक्षी जगत् और प्रकृति का बहुरंगी चित्रण मिलता है | वास्तुकारों और कलाकारों ने प्राकृतिक गुफाओं का उपयोग न करके पश्चिमी घाट के पहाड़ों की ठोस चट्टानों को काट कर गुफाएं बनाईं | उनमें चित्र बनाने के लिए चूने की मोटी तह जमाई गई है और निकटवर्ती स्थानों में पाये जानेवाले प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है | कालक्रम के अनुसार बौद्धों के हीनयान संप्रदाय के समय की गुफाएं सादी और बाद के महायान काल की गुफाएं अधिक अलंकृत तथा गौतम बुद्ध के चित्रों से युक्त हैं | यद्यपि समय बीतने के साथ चित्र धुंधले पड़ने लगे हैं फिर भी उनके रंगों और कलात्मकता को देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है | जिन गुफाओं में प्रकाश की कमी है, वहां अब दर्शकों की सुविधा के लिए बिजली का प्रबंध हो गया है |

2. **अतिथि :-**

प्राचीन भारतीय साहित्य में अतिथि को पूजनीय माना गया है | अथर्ववेद कहता है - अतिथि के खा चुकने के बाद भोजन करना चाहिए | तैतरेय उपनिषद में 'अतिथि देव' कहकर उसे माननीय बताया गया है | पुराणों के अनुसार जो निरंतर चलता है, ठहरता नहीं , वह अतिथि है | पहले से अज्ञात और घर आया व्यक्ति ही अतिथि है |

जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौटता है, वह उस घर को पाप देकर और उसके पुण्य लेकर चला जाता है | जो व्यक्ति देश, नाम,विद्या, कुल आदि पूछकर अतिथि को अन्न देता है, उसे पुण्य नहीं मिलता |

3. **अद्वैत :-**

एक ही तत्व को मूल माननेवाली भारतीय दार्शनिक विचारधारा | इसके अनुसार संसार में आत्मा और जगत् के बीच जो अंतर दिखाई देता है, वह वास्तविक नहीं है | हमें यह अंतर माया या अविद्या के कारण दिखाई देता है | संसार में जो भिन्नता है, वह सब मिथ्या है | वस्तुतः एक ही सत्ता है, एक ही सत्य है और वही ब्रह्म है | इतना ही नहीं, आत्मा और ब्रह्मा भी दो नहीं हैं | वह भी एक है | यही सिद्धांत अद्वैत कहलाता है | इस सिद्धांत के सबसे प्रमुख प्रतिपादक शंकराचार्य माने जाते हैं जिन्होंने उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिख कर अद्वैत वाद को दृढ आधार प्रदान किया | इससे पहले भी वेद और उपनिषदों में एक ब्रह्म का प्रतिपादन मिलता है | बौद्ध दर्शन की महायान शाखा भी अद्वैतवादी मानी जाती है|

आधुनिक भारतीय विचारकों में स्वामी विवेकानंद और अरविंद (दे.) इस विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं |

4. **अपभ्रंश :-**

यह छठी से बारहवीं शताब्दी के बीच उत्तर भारत की बोलचाल और साहित्य रचना की प्रमुख भाषा थी | इसे आर्य भाषा (संस्कृत) के मध्यकाल की अंतिम अवस्था और प्राकृत तथा आधुनिक भाषाओं के बीच की कड़ी माना जाता है | यह नाम उस समय तिरस्कार - सूचक समझा जाता था और संस्कृत से भिन्न प्रयोगों को "अपभ्रंश" कहा गया | इसी कारण कहीं -कहीं इसे "अपभ्रष्ट" की भी संज्ञा दी गई है |

अपभ्रंश में नब्बे प्रतिशत शब्द प्राकृत भाषा के हैं | पर व्याकरण के दृष्टी से विद्वान इसे आधुनिक भाषाओं के निकट मानते हैं | इस भाषा की प्राप्त अधिकांश रचनाएं जैन काव्य हैं | कुछ रचनाएं बौद्ध सिद्धों की भी मिलती हैं | अब तक लगभग डेढ़ सौ ग्रन्थ इस भाषा में लिखे हुए मिल चुके हैं जिसमें इसकी अपने समय की समृद्ध परंपरा का परिचय मिलता है |

राजभाषा अनुभाग

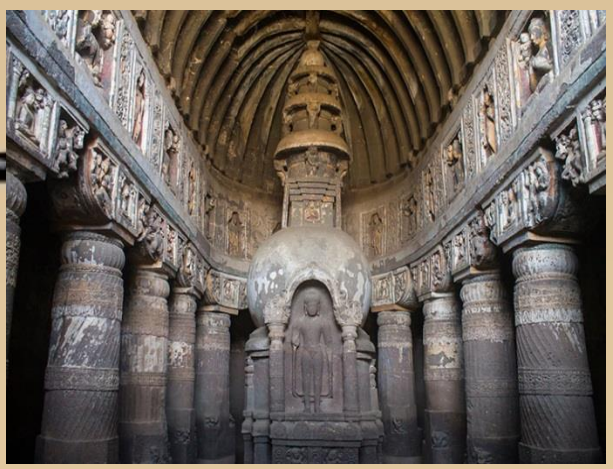

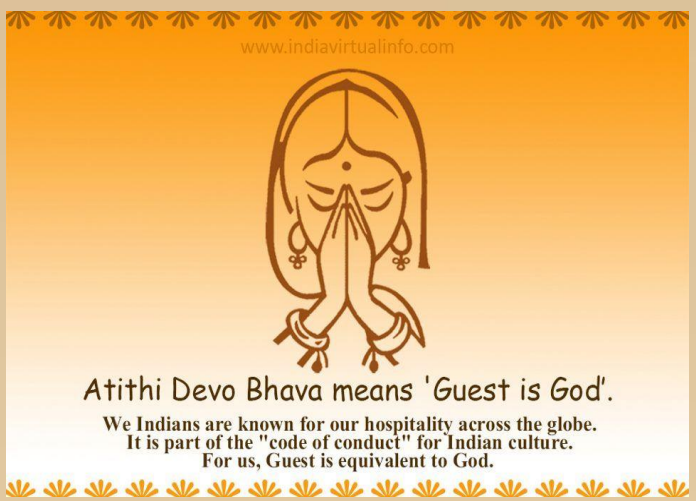



किरण शर्मा, निरीक्षक

कितनी परतें

कितनी परतें जिंदगी की
अभी बाकी है उधड़नी
सभी परतें खुलती जाएंगी
कितनी सुबहे शामों में बदलेंगी
कितनी रोशनी को अंधेरों से रूबरू होना है
कितने चौराहों में फसना अभी बाकी है
कितने लम्हों को सदियों में बदलना है
कितनी लहरों को किनारों का रुख करना है
कितनी मजलिसों को ख्वाम्खां होना है
कितनी उम्मीदों को धराशाई होना है
कई राजा और रानी की कहानियां बाकी हैं
कई परियों के किस्से भी बाकी हैं
वक़्त के दरिया में कितने गोते और लगाने बाकी हैं
परत दर परत बेहिसाब खुलती जाएगी
और जिन्दगी यूँही बहती जाएगी
परतें तो जिंदगी की हैं, लेकिन
जिंदगी के बाद तक उधडती जाएंगी

***

ना मुझे कोई तराना सुनाना था

ना उन्हे कुछ कहना था
ना मुझे कुछ सुनना था
बस शाम का मंज़र था
जिसे धूल मे दफनाना था
ना उन्होंने कुछ कहा
ना मैंने कुछ सुना
आसमान से गिरती बूंदो में ज़रा
शब्दों को ढूँढने का बहाना था

ना उन्हे कहीं जाना था
ना मुझे कहीं से आना था
बस तारों भरी रात पर
इल्ज़ाम बेवजह लगाना था
ना उन्हे किसी का इंतजार था
ना मुझे किसी पर ऐतबार था
मौसम की मासूमियत से
शिकवा वही पुराना था
ना उन्हे साथ निभाना था
ना मुझे इकरार जताना था
पर दो किनारों को मिलाने का
नामुमकिन एक फैसला हमारा था
ना उन्हे कुछ गुनगुनाना था
ना मुझे कोई तराना सुनाना था
यूँहि टूटे दिल के तारों पर
तान छेड़ना शौक हमारा था

***

शब्दों के आँगन में

शब्दों के आँगन में जब
सुरों का पंछी गाता है
वहाँ संगीत का मेला सा लग जाता है
कानों से मन में उतरकर
विचारों को चेतना देते हैं
आँगन में मीठी धुन फुदकने लगती है
शब्द इठला इठला कर चलते है
अपने होने का गुमान जताते हैं
शब्दों के संसार में
ना कोई हाहाकार है
ना प्रश्न है
ना कोई विस्मयबोधक है|
अपने दायरों में रहते हैं
शांत दरिया में
चुपचाप बहते रहते हैं
अंत में मन चेतना खोकर
शून्य में विचरता है

***

“मातृ-छाया”



बाल किशन, निरीक्षक

मैं मानता हूँ कि दुनिया का कोई रिश्ता छोटा या बड़ा नहीं होता ,पर मेरी माँ के बराबर कोई और खड़ा नहीं होता |

मेरे इंतज़ार में खुली आँखों से बस वहीं सो सकती है ,
मेरे दुःख में मुझसे ज्यादा बस वहीं रो सकती है |

माथा चूम के मुकद्दर बदल देने का जादू उसी को आता है ,
और उसी का हाथ है जो थर्मामीटर से ज़्यादा सटीक टैम्परेचर बताता है |

मैंने मोहब्बत की तमाम किताबें पढ़ डाली ,
पहले पन्ने पर माँ का ही नाम लिखा था |

वो मुझपे तबसे जान देती है ,
जब मैं प्रेगनेन्सी स्ट्रीप पर एक लकीर बनकर दिखा था |

हिसाब लगाकर देख लो - दुनिया के हर रिश्ते में कुछ अधूरा ; आधा निकलेगा ,
एक माँ का प्यार है जो दूसरों से || ज्यादा निकलेगा ‘नौ महीने ‘

स्रोत :मनोज मुंतशिर के स्वर

कोरोना काल के कुछ नए शौक और रुचियाँ |



श्रीमती रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

साल 2020, हम सब ने हर साल की तरह **"नया साल मुबारक हो"** कहकर शुरू किया था | नया साल लेकिन एक नई बीमारी लेकर आया था | कोरोना वायरस | पूरी दुनिया के साथ देश में भी लॉकडाउन चला | लोग अपने घरों में कैद रहें | जब बाहर जाना ही असंभव था, सामाजिक समारोहों का सवाल पैदा न होता था । जीवन बहुत उबाऊ हो गया था । इस प्रतिकूल परिस्थिति में मानव नए शौक और रुचियों की खोज में थे |

लॉकडाउन काल ने लोगों की छिपी क्षमताओं को बाहर निकाला है | इनडोर पौधों की बागवानी, घर में बने केक की बिक्री, एक यूट्यूब चैनल शुरू करना, बोतलों पर कलात्मक काम bottle art जैसे कि बोतलों पर कागज़ लगाकर decoupage करना, रस्सी बांधना, चित्र रचना करना, जापानी कार्टून कला 'एनीमे' सीखना, इन्टरनेट पर सीरीज और मूवीज देखना आदि | यूट्यूब में उक्त बातों के वीडियोस का भरमार है |

1. **घरों के भीतर लगाए जाने वाले [इनडोर] पौधों की बागवानी :-**

बाहर नहीं जा सकते तो अन्दर ही सही कुछ करते हैं, यह सोचकर **इनडोर** पौधों पर शौक चढ़ गए | अब अधिकाँश घरों में यह हाल हो गया है कि चलने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है, पौधों ने जगह ले ली थी | लोगों ने अपने घरों के बरामदों में पौधे सजाना शुरू कर दिया और आगे चलकर उन्हें बिकने भी लगे |सिरेमिक पॉट और प्लांट स्टांड की बिक्री भी आगे चलकर खूब चली | कुछ लोग अपने घरों में उपलब्ध पुरानी चीज़ों से पॉट और स्टैंड खुद बनाने लगे | यूट्यूब वीडियोस भी सहायता के लिए आई थीं |

2. **घरों में बने केक की बिक्री :-**

घर का बना केक **[होम मेड केक]** दुनिया भर के लोगों का सर्वकालिक पसंदीदा व्यंजन है | कोरोना काल में इस पसंद का काफी फायदा हुआ है | एक ही हाउसिंग सोसाइटी में कम से कम तीन - चार घरों में केक का उत्पादन होने लगा |जन्म दिन हो या शादी की सालगिरह अब दूकान जाने की ज़रुरत नहीं, बिना कोई प्रीसेर्वटीव या केमिकल से बना स्वादिष्ट केक हमारे मोहल्ले में ही उपलब्ध है, प्रश्न यह है कि हम किस से खरीदें ? सभी अपने ही लोग हैं |

3. यूट्यूब चैनल शुरू करना :-

यूट्यूब चैनल शुरू करना एक नया शौक है | घर बैठे ही हम लोगों के बीच जा सकते हैं इन चैनलों के माध्यम से | किसी भी विषय पर हम चैनल खोल सकते हैं | और लोगों के लैक्स और सदस्यता (मेम्बरशिप) की संख्या बढ़ते ही पैसा कमाना शुरू| इन चैनलों का और भी फायदे हैं, किसी भी विषय पर ज्ञान कमाना, अपने मोबाइल पर ही वीडियोस देखकर बोरियत को दूर करना, कोरोना काल को पार करने में यूट्यूब चैनलों का अहम् हिस्सा है | और तो और कई लोग रातों रात सेलेब्रिटी बन गए हैं |

यूट्यूब चैनल के लिए लोग कई प्रकार के विषय ढूंढते हैं जैसे कि "होम टूर", "किचन टूर", "गार्डन टूर", "सुन्दरता बढ़ाने के लिए टिप्स", "पाक –कला", "यात्रा व्लोग", "संगीत और नृत्य संबंधी वीडियोस", "चीज़ों को अपने आप बनाने की योजनाएं [DIY projects]" आदि |

4. बोतलों पर कलात्मक काम, [bottle art], decoupage आदि :-

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार decoupage नाम की फ्रेंच कला बोतल और अन्य चीज़ों पर करने से मन का तनाव दूर हो जाता है | decoupage शब्द मध्य फ्रेंच "डिकॉपर" से आया है, जिसका अर्थ है किसी चीज़ से कटौती करना । decoupage एक ऐसी कला है जिस में रंगीन कागज़ को काटकर किसी भी वस्तु पर गोंद से चिपका कर उसे सजाता है| ज़्यादातर लोग बोतलों पर यह काम करते हैं क्योंकि किसी भी शेप की बोतलें आसानी से मिल जाती हैं | इस कोरोना काल में बोतलों पर कलात्मक काम घर का कम से कम एक सदस्य करता ही होगा | रसोई घरों का रूप ही बदल गया था इन बोतलों से | decoupage के अलावा बोतलों पर रस्सी बांधकर उसे सजाने का काम, बोतलों पर चित्र कला करने का काम भी जारी है |

5. **जापानी कार्टून कला 'एनीमे' सीखना -:**

बच्चों और युवाओं के बीच जापानी कार्टून कला 'एनीमे' का बहुत बड़ा स्थान है |

इस कला को सीखने के लिए घंटों तक अपने पीसी [कंप्यूटर] या टैब या मोबाइल फ़ोनों के सामने बैठते हुए हमें वे नज़र आयेंगे | काफी सारे नए शब्द भी उनसे हम सीखेंगे | जैसे कि "डिटेलिंग", "एडिटिंग" और इसका यू ट्यूब रूपांतर हो तो gatchatuber आदि शब्द | भले ही ये कार्टून के पात्र पुरानी पीढी के लिए सुन्दर हो न हो उनके आँखें और बाल बहुत अनोखे होते हैं | शायद वे उन आँखों से ही सारी बातें बोल डालते प्रतीत होता है |

6. इन्टरनेट पर सीरीज और मूवीज देखना -:

कोरोना के आते ही सिनेमा हॉल सब बंद हो चुके थे | लेकिन लोगों के लिए मनोरंजन के साधनों में कोई कमी नहीं हुई थी | नेटफ्लिक्स, एमज़ोन प्राइम विडियो, ओटीटी प्लेटफार्म, आदि कई माध्यम से इन्टरनेट सीरीज और मूवीज लोगों के घर पहुँच रहे थे | बिना विज्ञापन के सिनेमा देखना भी एक अलग मज़ा है जो कोरोना काल में संभव हुआ था | न टिकेट लेने की झंझंट और न ही पॉपकॉर्न खरीदने की भीड़ से परेशान, अपने ही घरों में बैठकर आराम से मूवी देखना है |

शायद दुनिया अपने आप शुद्ध हो रहा है | जल और वायु प्रदूषण कम हो रहा था | धरती पर जीव जंतु फिर से प्रदूषण रहित हवा में घूमने लगे | मानव जाति भी कोरोना के साथ लेकिन कोरोना से बचकर जीने की सबक सीख ली थी | सामाजिक दूरी बरतना, मुख पर मास्क लगाना, हाथों को सेनीटैज़ करना और अब वैक्सीन भी लगाना आम बातें बन गईं हैं | उपर्युक्त बातें और रुचियाँ वर्ष 2020 से पहले हम शायद ही सुनी हो और कही हो | लेकिन साल 2020 हम सब को बदल दिया है | उम्मीद है कि साल 2021 हमें आगे चलने की सही राह दिखाएगा |

****

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मु.रा.भा.अनुभाग

“नारी”



रीमा सोलंकी,कर सहायक

नारी तेरे तीन रूप
तीनों रूप में प्यारी है |
ममता की तू कौशल्या है
मित्रों की तू सौमित्री है
कामना की तू कैकेयी है |
नारी तेरे तीन रूप
तीनों रूप में प्यारी है |

स्वभाव में तू ग्रीष्म ऋतु
भावनाओं में भादों है
संबंधों में शरद ऋतु है |
नारी तेरे तीन रूप
तीनों रूप में भायी है |

घर की तुम लक्ष्मी हो
समाज की तुम सरस्वती हो
दुःख में तुम दुर्गा हो |
नारी तेरे तीन रूप
तीनों रूप में प्यारी है |

बच्चों की तुम माँ हो
भाईयों की तुम बहना हो
जीवन पथ पर संगिनी हो |
इस धरा पर केवल तीन रूप
और चौथा रूप नहीं |
नारी तेरे तीन रूप
तीनों रूप में प्यारी है |

घर से दूर



मोहित कुंद्रा,कर सहायक

कामयाब होने की चाहत में
सब धनदौलत के लिए लड़े-
इन अरमानों को पूरा करने
हम भी नौकर बनने निकल पड़े।

शांत और सुखमय जीवन की
ख्वाहिश मन में दबी रही
धन अर्जन जीवन का लक्ष्य है
आगे कुछ ना गलत सही।

जीवन भर का पढ़ालिखा-
नौकरी पाने का जरिया था
भविष्य के सपने देख रहे थे
गुजरा कल एक दरिया था

कच्ची रोटी खाने को
हर दिन हम मजबूर हुए
पेट की भूख ना हुई खत्म
जिस दिन हम घर से दूर हुए।

छोटी खुशियां पाने को
ना मेहनत से कतराते है
हम रहते है दूर घर से
भूखे ही सो जाते है।

“माँ की रसोई” भोजनालय
अब एकमात्र सहारा है
अकेलेपन की आदत सी है
कमरे का चूहा भी अब प्यारा है।

बचपन की सूनी गलियां
आज भी इंतजार करती है
हम भूल ना जाएं उनको
इसी बात से डरती है।

अगर बेटियां घर का हीरा है
तो बेटे भी मोती है
कौन कहता है सिर्फ
बेटियां विदा होती है।।
- मोहित कुंद्रा

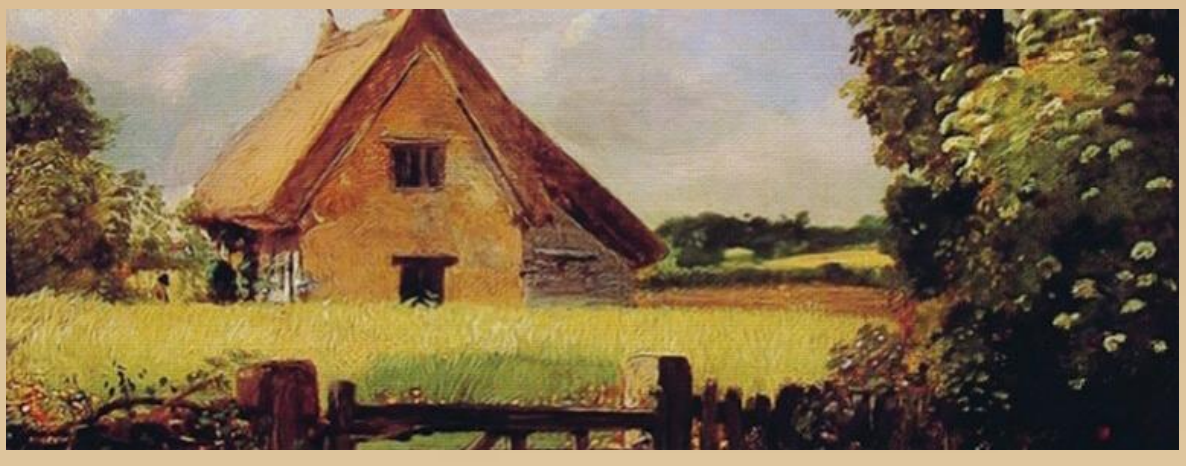

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2020/
Hindi Fortnight Valedictory Function 2020









जी एस टी दिवस /G.S.T.DAY 2020











जी एस टी दिवस /G.S.T.DAY 2020







स्वतंत्रता दिवस /Independence Day 2020









प्रधान मंत्री का जन आन्धोलन अभियान / 2020

Prime Minister's Jan Andolan Campaign 2020









क्रिसमस /Christmas 2020











गणतंत्र दिवस /Republic Day 2021









अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस / 2021

International Women's Day 2021









अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस / 2021

International Women's Day 2021







होली /HOLI 2021



आज़ादी का अमृत महोत्सव / AZADI KA AMRIT MAHOTSAV

मार्च /MARCH 2021



The COVID Paradox



Dr. Ajitesh Radhakrishnan, Joint Commissioner

Sometime in 2001, about 20 years back when I was reading the book titled *"Third Wave"* by Alvin Toffler, little did I know that this term would become synonymous with a pandemic of the proportion that we are witnessing today. Back then, 'third wave' to us meant the age of information in a post-industrial world. Today, when countries are reeling under the horrors of the so-called third wave of the pandemic, ironically and sadly what is scarce is proper information, that prevalent almost everywhere is misinformation. COVID-19 has rewritten and redrawn virtually all the laws of predictability and uncertainty. We are unable to presuppose if there will be a window of hope or whether there will be a ray of dawn - a time when we can lay back a bit and let our life shift gears on its own, something that we cherished yet took for granted in the past.

The pervasiveness and preponderance of misinformation only adds to the brutality of this uncertainty and makes one wonder if we would round the corner towards normalcy anytime soon. For many a sort of pandemic fatigue has begun to set in. Even so, these ruminations on what I call 'the COVID paradox' are not borne out of gloom or despair but tend to strike with an eye on how best we can manoeuvre around this threat. The coronavirus scare has resulted in conspiracy theories about the scale of the pandemic and its prevention, diagnosis, treatment, aftermath etc. False information including intentional disinformation has unfortunately taken grip of mass as well as social media. We hear of people monetizing this claiming to offer at-home tests, miracle cures and supposed preventives, which is much more disheartening.

India is now on the verge of entering the second wave of the coronavirus pandemic. While the efforts underway in our country are laudable, it is extremely crucial that an impetus is given to the scientific publishing community to come out with accurate and verifiable information so that valid reliable material is made accessible and available to all. I would personally urge everyone reading this to also visit retractionwatch.com, which highlights several papers which were flagged as misinformative or outright false to get a sense of how right the WHO is when it quips that we stand on crossroads of an infodemic of incorrect information about the virus that poses risks to global health. It is desirable to also recount the words of Indian author and human rights zealot Arundhati Roy *"Historically, pandemics have forced humans to break with the past and imagine their world anew. This one is no different. This Pandemic is a portal".*

The paradox is brazenly apparent. Many things have turned upside down. Infectious diseases which were once considered the commonplace of the third world are now no longer attributed that label. Masks which we often attributed to the sickly and the terminally ill are now seen as an instrument of necessity and prevention. Being introvertive, isolationist and socially distant which was considered a bad thing and sign of a deviant personality is now encouraged. Frugal spending which was once a bastion of a demographic that could not afford is the new rich. Traveling and globetrotting which was a status symbol is now looked down upon and even critiqued. I am reminded of a sanskrit shloka that we learnt during our school days that goes:

यस्तु संचरते देशान् यस्तु सेवेत पण्डितान् ।

तस्य विस्तारिता बुद्धिस्तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥

and translates as follows – *'The intelligence of a person who travels in different countries and associates with scholars expand, just as a drop of oil expands in water.'* The new normal does not seem to give that liberty anymore and the good old carefree days when you could just close your eyes and take off to any destination of your choice appear to have long gone.

While bygones are bygones, some new challenges have arisen. The COVID-19 pandemic raised its ugly head at the turn of this decade, and initially the aged, elderly and those with co-morbidities were identified as the highly vulnerable demographic. They would often turn out a poor prognosis, mortality rates being higher and response to therapy, if any, bleak. While this may still be true today, newer strains and mutations notwithstanding, kids, toddlers and teenagers are getting increasingly susceptible to poorer and non-binary outcomes. What that connotes is after the coronavirus infection in many instances people don't either fully recover or die. Many of those who survive their initial bout with the disease go on to experience mysterious and sometimes disabling symptoms for months. Recent studies have discovered the coronavirus having an impact on fertility of young people, and multi-organ affectation in the older people, another example of the paradox. No sooner had vaccines made their entry, vaccine-related fatalities have also mushroomed.

The initial vaccine distrust or vaccine hesitancy that was quite prevalent has considerably abated but so has education, transparency, and promotion of vaccine acceptance by healthcare workers and community leaders. While more than 919 million vaccine doses have been administered worldwide, effectively equalling 12 doses for every 100 people, huge gaps still remain. Countries that largely subdued the virus (eg. Japan and New Zealand) are among the slowest in the developed world to vaccinate their residents, while countries like Britain and the United States that suffered grievous outbreaks are leapfrogging on the vaccine front. While the list of paradoxes grows bigger, the very success in controlling the disease seems to be reducing the motivation and effort expended in setting up the necessary systems, leading to complacency and newer waves. In summary, the major lesson learnt from this pandemic and its paradox is the importance of self-restraint. As the Tamil poet Thiruvalluvar had it etched in his Tirukkural:

அடக்கம் அமரருள் உய்க்கும் அடங்காமை

ஆரிருள் உய்த்து விடும்.

Control of self does man conduct to bliss th' immortals share;

Indulgence leads to deepest night, and leaves him there."

The Ambush



Subhanshu Dutta,Inspr.

The sky darkened and it started to drizzle and as she walked out of her car she breathed a sigh of relief.
It had been a hectic day. But little did she know **what he had in his mind!**
She didn't want to get wet and spoil her clothes so as soon as she got out of her car she dashed towards her main gate. She opened the lock and entered her home.
She switched on the light but **the electricity was gone!**
She cursed the government and switched on her emergency light.
He didn't curse. He was happy. He was happy that finally, after the entire long wait **she had come home!**
He was hidden behind the curtain. He was waiting for her. He was waiting to ambush her.
She didn't notice anything odd. She was too tired for it.
He was restless. He couldn't wait to pounce on her and relieve himself of his day long misery he suffered whilst he waited for her to finally come back, he wanted her all for himself. He was so happy thinking about the stuff he would do to her. He would play those games, and thinking about that gave him such an immense pleasure. His tongue just wagged. No one could know what was going on in his mind.
She wasn't aware what awaited her.
She had no idea!
The game he wanted to play was about to start. Suddenly she remembered something and looked around her apartment nervously.
Suddenly the electricity came!
And as she forgot everything and as soon as she switched on the TV he grabbed the opportunity and ran towards her.
He jumped. He grabbed her.
She screamed!
She had a mini heart attack as she was startled!
He wouldn't let go of her.
But something happened! She just held him and made him sit on her lap and continued watching the TV!
She kissed him!
She apologized that she forgot about him.
He was lonely. He just wanted her to come back.
He was tired of waiting.
Her poodle loved her.

The tree of life



Ku.Gayathri K.K.
D/o Sindhu M.S.,Supdt.

Birth is the life's first gain
Just like an unexpected seed
Growing in every yard that rain
Where we find ourselves lead
In the path of our life

Slowly comes the storms
That tests our strong roots
The strongest of us take forms
To protect our own fruits
Whilst some may even collapse

We relax as the sky clears
Not knowing what is yet to come
But slowly we leave our dears
Just as the leaves turn to crumb
We still stand firm to do our parts

At times we stood as barrier
To fulfill our dreams and goals
Of which our parents became carriers
Which, laid down our path to bowl
Rather than spoiling it down

The new off springs are created
Which flowers, ripens and bears fruits
Just the way how we waited
Time is what it depends upon to suit
As slowly we return to our creators.

Now what left are sorrowful memories
To what we all laughed at once
But today I could see all the worries
Because today I stand in a long track
That is far away from my home.

An Apology



Ku.Gayathri K.K.
D/o Sindhu M.S.,Supdt.

Life tasted failure for the first time
As you destroyed my precious prime
School and Physics turned case of hate
I lost one year and a bunch of mates

But above all she helped me change
She grew obstinate in mind's range
Her rude behavior made me bold
I learned to survive any spot she told
Friends are interims and will be gone
Made me realize my life is my own
All these meant she knew me well
She failed me, to save me from jail cell

All this was for developments in my life
I was blind as I couldn't see her love rife
My realization showed time passed away
And it's been years we have talked till today

WORK FROM HOME – THE NEW NORM?



Bhaskarnath, Inspr

Many years from now, a generation of kids will grow up listening to stories about a great pandemic. Their grandparents will probably speak of the horrors of a virus that was dropping people dead, a virus that brought the entire world to a grinding halt and the one that elevated face masks to a fashion statement. The pandemic has changed the world as we know it. It questioned our existing way of life and has set new rules in a new and ultra-virtual world.

The pandemic brought with it both challenges as well as opportunities. As Schools and businesses were forced to go online, mobile phones morphed into a tool than a communication device with faster connectivity thanks to 4G and optical fiber broadband, the journey from the real to the virtual was almost seamless.

Our department was quick to adapt to this change. E-office implementation sought to take the challenge and make it an opportunity and overnight, work that needed large physical files could now be completed from any computer, from anywhere with an active internet connection. This provides for great mobility within the department, no one was stuck on a desk or limited by a punching system. The system offered great flexibility with officers now able to prioritize and choose when to complete the work which in turn improved the systemic efficiency while saving on time lost in travelling to and from the office. The lack of a physical file also reduced the direct contacts between officers and enabled them to check the spread of the virus by avoiding direct contact.

With work from home increasingly becoming the norm and the need of the hour, a few best practices need to be implemented when working from home to ensure discipline and efficiency. Let us discuss a few of them:-

- Create a dedicated space for work at home: More often than not, we tend to use laptops at home owing to their convenience. Laptops have the advantage of portability which can also be a weakness when it comes to creating an efficient workspace. We should avoid moving from one room to another with the laptop while working and instead create a dedicated desk space for working. Make sure we are within this space whenever we are working as this helps create a demarcation in our minds and improves our work focus through muscle memory.

- A chair and a desk: The home is comforting, but we should remember that the factors that lead to comfort for work is different to that of comfort for leisure. So the bed or the couch, which are our constant companions for leisure, should not be our companion for work. Working from bed might be efficient for some, but this encourages bad posture and could lead to back, neck and shoulder pains in the long run. Having a chair and a desk dedicated as a workspace would be better for the body and the mind.

- *A dedicated internet connection:* Yes, internet has become cheaper, but connectivity is very subjective. When working from home, a dedicated internet connection is always preferable than a mobile hotspot. A mobile hotspot is not consistent and will be cut off when we are forced to take phone calls. If there are no fixed internet connections in your area, try to keep a dedicated sim connection with a mobile Wi-Fi router for work purposes to ensure seamless connectivity at all times.

- *Plan designated work timings:* Working from home has the added distractions of a household. This could be children, online classes, cooking or cleaning. It is thus very important to plan your work timings so as to ensure minimum distractions. This could mean working early in the morning or late in the night, but plan this ahead, schedule it into your day and make sure you stick to only doing office work during the designated timings.

- *Keep in touch with your colleagues:* The best part of coming to the office is the wonderful time we get to spend with our friends and colleagues. The discussions broaden our horizon and keep us updated while refreshing our minds from our daily worries. So make sure you find time to call up and check on your friends and when you are at it why not organize an online meeting over a cup of tea.

The world has changed in 2020 and some changes such as work from home looks like it is here to stay. Let us learn to embrace this change responsibly.

BHASKARNATH
INSPECTOR



चित्रकला Drawings



Shauryaman, S/o Sanjeev Kumar, Inpsr





“നീ, ഞാൻ, പിന്നെ നമ്മൾ”

Alas..!!
There’s no more myself left in me,
It’s just some good and bad things,
As judged by you…

2.
നമ്മൾ
അന്ന് നീ ഓടിവന്ന് കോർത്തത്
നമ്മുടെ ചെറുവിരലുകൾ മാത്രമല്ല...
അന്ന് നടന്ന് തുടങ്ങിയതിലും
ചേർന്ന് ഞാനിന്ന് നടക്കുന്നു...
അതിനുള്ള അനുവാദം നീ എനിക്ക്
തരുന്നു...
നിന്റെ സ്വപ്നങ്ങൾക്ക്
ചാർത്തുവാനുള്ള
ചായങ്ങൾ വഴിയിൽ ഞാൻ
തിരയുന്നു...
നിന്റെ ഒരു സ്വപ്നവും നിറം
മങ്ങാതിരിക്കാൻ
എന്റെ ഓരോ നിമിഷവും ഞാൻ
നിനക്കായ്ത്തരുന്നു...

3.
നീ
നിന്റെ നഖം ആഴ്ന്നിറങ്ങിയ
ഇടതുനെഞ്ചിൽ പൊടിഞ്ഞത് എന്റെ
ചോരയല്ല,
നീയാന്നാ അത്തറിന്റെ ചെപ്പ്
തുറന്നതാണ്...
എന്റെ ഹൃദയം നിറഞ്ഞിരിക്കുന്ന നീ
അതിലൂടെ എന്നും എപ്പോഴും
എപ്പോഴും എപ്പോഴും സുഗന്ധമായ്
പരന്ന്
എന്നിൽ നിറയുന്നു...

Arun Kumar A, Supdt.



4.
ഞാൻ
എന്റെ പ്രതീക്ഷയുടെ ചിറകുകൾ
ഇന്നെനിക്ക് ബാധ്യതയാണ്...
അതിലെ ഓരോരോ തൂവൽ പറിച്ച്
നീ മൗനത്തിന്റെ, നിന്റെ, ലോകം
കെട്ടിപ്പടുക്കുന്ന തിരക്കിലായിരുന്നു..
ചിറകുകളുണ്ടെങ്കിലും, പറക്കമറ്റ്
ഇത്രയും ഞാൻ നടന്നു...
ഈ ഭാരം താങ്ങാൻ വയ്യ...
ഇഴഞ്ഞെങ്കിലും എനിക്ക്
മുന്നോട്ട് നീങ്ങിയല്ലേ പറ്റൂ...

5.
നമ്മൾ
എന്റെ രക്തം വാർന്നൊഴുകുന്നത്
നീ ഇനിയും അറിയുന്നില്ലേ..?
നിന്റെ ഓർമ്മച്ചെടികളുടെ വേരുകൾ
എത്ര ആർത്തിയോടെയാണ്
ഈ ചുവന്ന മഷി കുടിക്കുന്നത്...

6.
ഞാൻ
എന്റെ വായടയ്ക്കാനല്ല,
എന്റെ ചിന്തകളെ അടക്കാനായിരുന്നു
നിങ്ങൾ ശ്രമിക്കേണ്ടിയിരുന്നത്...

7.
ഞാൻ
ഈ വരികളിൽ നിനക്കായ്
ഞാൻ കരുതിവെച്ച എന്റെ
പ്രണയത്തിന്റെ മണിമുത്തുകൾ
മാത്രം...
കൂടുതൽ ഭംഗിയുള്ള മുത്തുകൾ തേടി
നിന്നിലേക്കാണ് ഞാൻ ഒളിക്കുന്നത്,
നിന്റേതുമാത്രമായ എന്നെയുംകൊണ്ട്...

8.
നീ
It wasn't all of a sudden,
That you caused to be the meaning…
That you caused to be the purpose…
Every single brick had your name on it…

And I built a fort,
As high as a mountain and
As deep as an ocean…
It was all you… and you alone…

9.
നീ
कभी सपना बन कर
कभी शायरी बन कर
रहते हो तुम, रात और दिन,
मेरे ही अंदर।
बहते हो तुम मुझमे से
मुझे अच्छा कहलाते हुए,
मुझे और अच्छा बनाते हुए।

10.
നീ
കടുത്ത ആരാധനയാണ്...
എന്നാലതിനുള്ള പഴി ഞാനേൽക്കില്ല...
നിന്റെ സൃഷ്ട്ടി. അത്
ആരേയോ തോൽപ്പിക്കാനെന്നപോലെ...
അകത്തുനിന്നും പുറത്തുനിന്നും ഒരേ
ഭംഗിയിൽ...
And
Being you is
The gratitude you could show
Being you is
The blessing you could spread

11.
നീ
ലഹരിയെന്നത് നീ മാത്രമാണ്...
ഇന്ന് ഞാൻ എഴാംവാനിൽ
നിൽക്കുമ്പോഴും,
നിന്നെ തിരയുമ്പോഴും, നീ അതിനും
മേലെ തന്നെ...

നിന്നിലും വലിയ ലഹരി
എന്റെ
അവസാനശ്വാസത്തിനപ്പുറത്തെന്ന്
ഇന്ന് ഞാൻ അറിയുന്നു...

12.
നീ
മനസ്സിൽ കിളിർത്ത അക്ഷരങ്ങളിൽ
നിറഞ്ഞുനിന്നത് ഞാൻ ആണെങ്കിലും
അവ വരികളായി
ചിട്ടപ്പെടുത്തിയപ്പോൾ
അതിലെല്ലാം തെളിഞ്ഞത് നീ
മാത്രമാണ്...

13.
My Life
Musings of my life says,
You loved her more than
You have loved anyone else…

You are breathing,
Meaning, I"m still with you…
Until that time,
When you need me…

14.
ഞാൻ
ഏതേത് നിനവിന്റെ കൽപ്പടവുകൾ
കയറി
എൻ പ്രതീക്ഷകൾതൻ കിരണങ്ങൾ
തേടി ഞാൻ
എന്നെയിന്നേറ്റത് പുതുസൂര്യോദയം;
ഇനിയെന്നും
എനിക്കായ് കണികാണുവാൻ, കൂടെ
എന്റെ സ്വന്തം
സ്വർണ്ണസൂര്യകാന്തിപ്പൂവും...

15.
ഞാൻ
നീ എനിക്കായ് ഒന്ന് പാടുമോ..?
നിന്റെ സ്നേഹം
നിന്റെ സന്തോഷം
നിന്റെ ഉന്മാദം
നീയിതെല്ലാം ഒരു മൂളിപ്പാട്ടിൽ
ഒതുക്കിയാൽ
നിന്റെയുള്ളിൽ ഇരുന്ന് ഞാനിന്നത്
കേൾക്കില്ലേ..?

16.
ഞാൻ
നീർത്തുള്ളി
ജീവനേ....
എന്റെ ആത്മാവിൽ വീഴ...

ചുളിവ് നിവരും വരെ
പുകയടങ്ങും വരെ
എന്നിൽ പെയ്ത്
എന്നെ നീ സ്വന്തമാക്ക...

17.
ഞാൻ
നീയാം സാഗരത്തിൽ
വിരിഞ്ഞ മേഘങ്ങൾ മാത്രമേ
ഞാനാം വാനിലുള്ളൂ...

18.
നമ്മൾ
നീയെന്ന വിത്ത് വീണത്
എന്റെ ആത്മാവിലാണ്...
കാലക്രമത്തിൽ നിന്റെ വേരുകൾ
എന്നിലോടിയത്
ഒരാൽമരത്തിനെ വെല്ലുന്ന
വേഗത്തിലും പരപ്പിലുമാണ്...
നീയോ ഞാനോ അതറിഞ്ഞില്ല...
ഇന്നാവേരുകൾ എന്റെ ശരീരത്തിന്റെ
ഓരോ അണുവിലും
സ്പർശിച്ചാണുള്ളത്...
നിന്റെ ചിന്തകളേയും ചേതനകളേയും
നിന്നെക്കാൾ മുന്നേ
ഞാനറിയുന്നു, ഞാനാവുന്നു...

19.
ഞാൻ
നിന്നെ ഞാൻ
സ്വർണ്ണസൂര്യകാന്തിപ്പൂവെന്ന് വിളിച്ചു.
സൂര്യനാം നിന്നെമാത്രം ഓർക്കുന്ന,
പകൽ നിന്നിൽനിന്നും കണ്ണെടുക്കാത്ത,
നിറസന്ധ്യയണയുമ്പോൾ മുഖം വാട്ടുന്ന,
പുലരിയിലെ നിന്റെ കിരണങ്ങൾ
തൊട്ടുതലോടുമ്പോൾ മാത്രം ഉണരുന്ന,
ഞാൻ...

20.
ഞാൻ
നിന്റെ ഓരോ
കണ്ണുനീർതുള്ളിയുടെയും
പേറ്റുനോവിന്ന് പേറുന്നത്
നിന്നെക്കാളേറെ ഞാൻ ആണെങ്കിൽ
എങ്ങനെ എൻമകളെ, നിന്നെ
എന്റെ കൃഷ്ണമണിപോൽക്കാത്ത്
ഞാൻ പൊതിയാതിരിക്കും...

21.
നമ്മൾ
ഓരോ കണ്ണുനീർതുള്ളിയും നമുക്ക്
പിറന്നത്...
സന്തോഷത്തിലും സങ്കടത്തിലും...
എല്ലാം ഒന്നുപോലെ, നമ്മുടെ സ്വന്തം...



Habby Sheeban, Stenographer

രാവ് പൂക്കുമ്പോൾ

ഡോ. ജാനിക താൻ രാവ് പൂക്കുന്നത് കണ്ടിട്ടുണ്ടോ?
ജാനിക ഒരു ചെറു ചിരിയോടെ കാശിയുടെ മുഖത്തേക്ക് നോക്കി എന്നിട്ട് ചോദിച്ചു രാവ് പൂക്കേ... കാശി ഇങ്ങനെ മണ്ടത്തരം പറയാനാണോ എന്നെ വലിച്ചു കയറ്റി ഈ കുന്നിന്റെ മുകളിൽ കൊണ്ട് വന്നത്... കാശി പൊട്ടിച്ചിരിച്ചു... ജാനിക തെല്ലു പരിഭ്രമത്തോടെ കാശിയെ നോക്കി... തനിക്കെന്തോ പറയാൻ ഉണ്ടെന്നു പറഞ്ഞത് ഇതാണോ അവൾ ചോദിച്ചു.. ഇതൊക്കെ തന്നെ അല്ലാതെ എന്ത് പറയാനാ?. നാളെ അല്ലേ തന്റെ ആൾ ഇന്ത്യ ട്രിപ്പ് തുടങ്ങുന്നേ.... ഇനി കുറച്ചു നാൾ കഴിഞ്ഞല്ലേ തന്നെ കാണാൻ കഴിയു എന്ന് കരുതിയാണ് ഞാൻ ഈ നേരത്തു കാശി താൻ വിളിച്ചപ്പോൾ ഞാൻ വന്നത്. എന്നിട്ട് താൻ വട്ട് പറഞ്ഞിരിക്കുവാണോ... അവൾ ചെറിതായി ദേഷ്യപ്പെട്ടു... ഓഹോ അല്ലെങ്കിൽ താൻ ഞാൻ വിളിച്ചാൽ വരില്ലേ അപ്പോൾ..ജാനിക ഒന്നും മിണ്ടിയില്ല... ഉള്ളിന്റെ ഉള്ളിൽ അവൾക്കും ചെറിയൊരു സങ്കടം ഉണ്ടായിരുന്നു. ഇനിയെന്ന് തമ്മിൽ കാണാൻ ആണ്... കാശിയെ പരിചയപ്പെട്ടു അധികകാലം ആയിട്ടില്ലെങ്കിലും, പെട്ടന്ന് ഒരു സുഹൃത്തു വിട്ടു പോകുന്നെന്ന് കേട്ടാൽ ആർക്കാണ് സങ്കടം തോന്നാതിരിക്കുന്നത്... ഒരു സൗഹൃദത്തിൽ കൂടുതൽ താനും ആഗ്രഹിച്ചിരുന്നോ... ഹേയ് ജാനിക താനെന്താ ചിന്തിക്കുന്നതെന്നു ഞാൻ പറയട്ടെ.. അവളുടെ ചിന്തകൾക്ക് മേലെ കാശിയുടെ ചോദ്യം വന്നു... അവൾ ആകാംഷയോടെ അവനെ നോക്കി.. ഞാൻ പോയിക്കഴിഞ്ഞിട്ട് തനിക്കു ഒറ്റയ്ക്ക് അടിച്ചു പൊളിക്കുവാനുള്ള പ്ലാൻ ആലോചിക്കുവല്ലേ... ഒരു കുസൃതി ചിരി പാസാക്കി കാശി.. ഹാ അതേടോ... വീണ്ടും ജാനികക്ക് ദേഷ്യം വന്നു... അവൾ തന്റെ മനസ്സിൽ അടക്കം പറഞ്ഞു.. പൊട്ടൻ...അല്ല എന്നോട് അടികൂടി മതിയായെങ്കിൽ വാ പോകാം സമയം 11.58 ആകുന്നു.. അവൾ പോകാൻ എഴുനേറ്റു... കാശിയെ കടന്നു പിന്നിലേക്ക് നടക്കവേ താഴ്വരയിലെ അവസാന വെളിച്ചവും അണഞ്ഞു... കാശി തന്നെ കടന്നു പുറകിലേക്ക് പോകുന്നവളുടെ കൈയിൽ പതുക്കെ പിടിച്ചു... ജാനിക പെട്ടന്നു നിന്ന് പതിയേ തിരിഞ്ഞു നോക്കി അവളുടെ കണ്ണുകൾ ആ കാഴ്ച കണ്ടു വിടർന്നുവന്നു... ആകാശത്താകെ പൂക്കൾ വരിവിതറിയപോലെ... നക്ഷത്രങ്ങൾ പലനിറങ്ങളിൽ... അവൾക്ക് തന്റെ കണ്ണുകളെ വിശ്വസിക്കാനായില്ല...കാക്കത്തോള്ളായിരം നക്ഷത്രങ്ങൾ ചേർന്നൊരുക്കിയ ആകാശഗംഗയുടെ അതിമനോഹരമായ കാഴ്ച നോക്കി നിൽക്കെ പൂവിരിയുന്നതുപോലെ അവ തെളിഞ്ഞു വരുന്നു... അതിൽ നിന്നും കണ്ണെടുക്കാതെ അവൾ പതിയെ പറഞ്ഞു കാശി താങ്ക്സ്... കാശി പതിയെ എഴുന്നേറ്റു....അവളുടെ കൈകൾ തന്റെ കൈയിൽ ചേർത്തുപിടിച്ചു കാശി അവളുടെ ചെവിയിൽ പതുക്കെ ചോദിച്ചു

"രാവുപൂക്കുന്നത് കണ്ടിട്ടുണ്ടോ" താൻ

കൊഫെപോസ എന്നാലെന്താണ്?



എം ആർ രാമചന്ദ്രൻ,
Asst. Commissioner

അവശ്യവസ്തുക്കളും,സേവനങ്ങളും വിദേശരാജ്യങ്ങളിൽ നിന്നും സ്വീകരിക്കേണ്ടിവരുന്ന സന്ദർഭങ്ങളിൽ ഓരോ രാജ്യത്തിനും വിദേശനാണ്യം ഏറെ പ്രധാനപ്പെട്ടതാണ്. കയറ്റുമതി,വിദേശത്തുള്ളവർ അയയ്ക്കുന്ന പണം, വിദേശനിക്ഷേപങ്ങൾ തുടങ്ങി വിവിധമാർഗങ്ങളിൽനിന്നാണ് വിദേശ നാണ്യം ഓരോ രാജ്യവും ശേഖരിക്കുന്നത്. വിദേശനാണ്യവിനിമയം നിയമപരമായ പല നിയന്ത്രണങ്ങൾക്കുംവിധേയമാണ്. വിദേശനാണ്യനിയന്ത്രണചട്ടങ്ങളുടെ ലംഘനവും, കള്ളക്കടത്ത്പ്രവർത്തനങ്ങളും ദേശീയ സമ്പത് വ്യവസ്ഥയെ എത്രത്തോളം ദോഷകരമായി ബാധിക്കുമെന്നും അതുവഴി രാജ്യസുരക്ഷക്ക് അത്ഗുരുതരമായ പ്രതികൂല ഫലമുണ്ടാക്കുകയും ചെയ്യു മെന്നും നമുക്കറിയാം. ഇന്ത്യയിൽനേരത്തെനിലനിന്നിരുന്നവിദേശനാണ്യവിനിമയറെഗുലേഷൻആക്ട്, 1973 **{Foreign Exchange Regulation Act, 1973(FERA)}** ആയിരത്തി തൊള്ളായിരത്തി തൊണ്ണൂറ്റി ഒമ്പതാം (1999) ആണ്ടിൽ മാറ്റം വരുത്തി വിദേശ നാണ്യവിനിമയ മാനേജ്മെന്റ് ആക്റ്റ് **{Foreign Exchange Management Act,1999 (FEMA)}01/6/2000**-ത്തിൽ നിലവിൽ വന്നു.കയറ്റുമതിപ്രോത്സാഹിപ്പിക്കുന്നതിനുംവിദേശനാണ്യംകൂടുതലായിനേടുന്നതിനുംമറ്റുമായിഉദാരവൽക്കരണനയംഉൾക്കൊണ്ടാണ്ഇപ്പോഴത്തെനിയമംനടപ്പിലാക്കിയിട്ടുള്ളത്.

വിദേശനാണ്യവിനിമയവുമായി ബന്ധപ്പെട്ട മറ്റൊരു പ്രധാന നിയമമാണ് **1974-** ൽ നിലവിൽവന്ന"കോഫെപോസ,".വിദേശനാണ്യവിനിമയംസംരക്ഷിക്കുന്നതിനോടൊപ്പം ആഭ്യന്തരവരുമാനംവർദ്ധിപ്പിക്കുക,കള്ളക്കടത്ത്പ്രവർത്തനങ്ങൾതടയുകഎന്നീലക്ഷ്യങ്ങൾക്കായി,കള്ളക്കടത്ത്കേസുകളിൽഉൾപ്പെട്ടവരെകരുതൽതടങ്കലിൽവയ്ക്കുന്നതിന് അനുവദിക്കുന്നനിയമമാണ്കൊഫെപോസആക്ട് ,1974 **(The Conservation of Foreign Exchange And Prevention of Smuggling Activities Act, 1974).**ഭരണഘടനയുടെഒൻപതാംഷെഡ്യൂളിൽഉൾപ്പെടുത്തിപ്രത്യേകസംരക്ഷണംനൽകിനിർമിക്കപ്പെട്ടകൊഫെപോസനിയമംകള്ളക്കടത്തിന്റെപേരിൽഒരുവ്യക്തിയെകരുതൽതടങ്കലിൽവെക്കുവാൻഎക്സിക്യൂട്ടീവിന്അധികാരംനൽകുന്നു.

രാജ്യപുരോഗതി തടയുക എന്ന ലക്ഷ്യത്തോടെ ചില ഗൂഢശക്തികൾ അവരുടെ പ്രവർത്തനങ്ങൾക്ക് വളരെയധികം സാധ്യതയുള്ള പ്രദേശങ്ങളെ അടിസ്ഥാനമാക്കി കള്ളക്കടത്ത്സംഘടിപ്പിക്കുകയും അതീവ രഹസ്യമായി ഓർഗനൈസു ചെയ്ത്നടപ്പാക്കുകയും ചെയ്യുന്ന വേളകളിൽ ഇത്തരം വിധ്വംസക പ്രവർത്തനങ്ങൾ കണ്ടുപിടിച്ച് അതിനു

ചുക്കാൻ പിടിച്ചവർ ആരൊക്കെ എന്ന ബോധ്യം വരുന്ന സമയങ്ങളിൽ അവരുടെ അത്തരം പ്രവർത്തനങ്ങൾക്കും, ലംഘനങ്ങൾക്കും തടയിട്ടുകൊണ്ട്ബന്ധപ്പെട്ടവ്യക്തികളെ കരുതൽതടങ്കലിൽ വയ്ക്കുന്നതിനും അതിലൂടെ നമ്മുടെ സാമ്പത്തിക അടിത്തറയും രാജ്യസുരക്ഷയും ഉറപ്പാക്കുന്നതിനും ഈ നിയമം നിലകൊള്ളുന്നു.

കള്ളക്കടത്ത്നടത്തുക, അതിനുപ്രേരിപ്പിക്കുക, സഹായകരമായകാര്യങ്ങൾചെയ്യുക, കള്ളക്കടത്ത്സാധനങ്ങൾകൊണ്ടുപോവുക,ഒളിച്ചുവെക്കുകയോഅവസൂക്ഷിക്കുകയോചെയ്യുക,അതിനുസഹായകമാകുംവിധംഇടപെടലുകൾനടത്തുക, അവരെ ഒളിച്ചുപാർപ്പിക്കുക അതിനുള്ള സഹായങ്ങൾ ചെയ്യുക മുതലായ പ്രവർത്തികളിൽ ഏർപ്പെടുന്നവർ എന്ന ബോധ്യം വന്നാൽ അവർ വിദേശീയർ ആണെങ്കില്പോലും വിദേശനാണ്യത്തിന്റെ സംരക്ഷണത്തിനോ വർദ്ധനവിനോ എതിരായി ഭവിക്കാവുന്ന പ്രവൃത്തിയിൽ നിന്ന് തടയുക എന്ന ഉദ്ദേശ്യത്തോടെ മുൻകരുതൽ എന്ന നിലയിൽ തടങ്കലിൽ പാർപ്പിക്കുവാനുള്ള ഉത്തരവു നൽകാനുള്ള അധികാരം ഈ നിയമം അനുവദിക്കുന്നു. കേന്ദ്രസർക്കാരിന്റെ കീഴിൽ ഇതിനായി അധികാരപ്പെടുത്തിട്ടുള്ള ജോയിന്റ് സെക്രട്ടറി പദവിയിൽ താഴെയല്ലാത്ത ഏതെങ്കിലും ഉദ്യോഗസ്ഥനോ, സംസ്ഥാന സർക്കാറിന്റെ കീഴിൽ ആ ഗവൺമെന്റിന്റെ സെക്രട്ടറി പദവിയിൽ താഴെയയല്ലാത്ത അധികാരപ്പെടുത്തിട്ടുള്ള ഏതെങ്കിലും ഉദ്യോഗസ്ഥനോ കൊഫെപോസനിയമപ്രകാരം കരുതൽതടങ്കൽ ഉത്തരവിറക്കുവാൻ സാധിക്കുന്നതാണ്. **(Sec.3).**

കോഫെപോസ ആക്ട് 1974 ലെവകുപ്പ് 4 പ്രകാരം സംസ്ഥാനത്തിനോ , കേന്ദ്രസർക്കാറിനോ ഒളിച്ചോടിയ ഒരാളുടെ കാര്യത്തിൽ ക്രിമിനൽ നടപടി ക്രമങ്ങൾ പ്രകാരം അറസ്റ്റ് വാറണ്ട് നടപ്പാക്കുന്നതു പോലെ ഒരു വ്യക്തിയെ കരുതൽ തടങ്കലിൽ വയ്ക്കാനുള്ള ഉത്തരവ് അയാൾ ഇന്ത്യയിലെവിടെയാണെങ്കിലും അനുയോജ്യമായ കോടതി മുഖാന്തിരം ക്രിമിനൽ പ്രൊസീജ്യർ കോഡിലെ വ്യവസ്ഥകൾ അനുസരിച്ച് നടത്തിയെടുക്കാവുന്നതാണ്. ഔദ്യോഗിക ഗസറ്റിൽ തടങ്കൽ ഉത്തരവ് വിജ്ഞാപനം ചെയ്ത് നിർദ്ദിഷ്ട കാലയളവിനുള്ളിൽ റിപ്പോർട്ട് ചെയ്യാൻ വ്യക്തിയോട് ആവശ്യപ്പെടാനും നിയമപ്രകാരം കഴിയുന്നതാണ്.മതിയായ കാരണമില്ലാതെ റിപ്പോർട്ട് ചെയ്തില്ലെങ്കിൽ, പിഴയോടൊപ്പം ഒരുവർഷം തടവിലാക്കാനും കഴിയുന്നതാണ് **(Section 7 of COFEPOSA, 1974).**

ഭരണഘടനയുടെആർട്ടിക്കിൾ 22 (3) പ്രകാരം പ്രതിരോധ നടപടികളുടെ ഭാഗമായി ഒരു വ്യക്തിയെ തടഞ്ഞു വയ്ക്കാൻ കഴിയുന്നതാണ്. കേന്ദ്രസർക്കാരും, സംസ്ഥാന സർക്കാരുകളും ആവശ്യമുള്ളപ്പോഴെല്ലാം ഭരണഘടനയുടെ ആർട്ടിക്കിൾ 22 (4)(എ)) പ്രകാരം ഒരു ചെയർമാനും മറ്റു രണ്ടു അംഗങ്ങളും**(Judges of High Court)** ഉൾപ്പെടുന്ന ഒന്നോ അതിലധികമോ ഉപദേശക ബോർഡുകൾ രൂപീകരിക്കുന്നു. കൊഫെപോസ പ്രകാരം ഒരാളെ തടഞ്ഞു വെച്ചിരിക്കുന്ന തീയതി മുതൽ നിശ്ചിത 5 ആഴ്ചയ്ക്കുള്ളിൽ ഇദ്ദേഹത്തെ തടങ്കലിൽ വയ്ക്കാൻ മതിയായ കാരണമുണ്ടെന്ന് കാണിച്ച് നൽകുന്ന നിവേദനം കണക്കിലെടുത്തു ഉപദേശക സമിതി നൽകുന്ന റിപ്പോർട്ട് പ്രകാരമാണ് തടവ് കാലാവധി മൂന്ന് മാസത്തിൽ കൂടുതൽ നീട്ടുവാൻ കഴിയുന്നത്.

സെക്ഷൻ 11 (6) പ്രകാരം ഒരു വ്യക്തിയെ ജാമ്യത്തിലോ ബോണ്ടിലോ വിട്ടയക്കാനാവില്ല അല്ലെങ്കിൽകോഫെപോസആക്ട്, 1974 ലെ വ്യവസ്ഥകൾ പ്രകാരം തടങ്കലിൽ വച്ചാൽ കോടതിക്ക് ഒരാളെ ജാമ്യത്തിലോ ബോണ്ടിലോ വിട്ടയക്കാനാവുന്നതല്ല. പൊതുജനങ്ങളുടെയും രാജ്യത്തിന്റെയും താൽപ്പര്യ സംരക്ഷ ണാർത്ഥം പൗര സ്വാതന്ത്ര്യം വെട്ടിക്കുറയ്ക്കാമെന്നു വിധിച്ചു കൊണ്ട് കോഫെപോസയുടെ സാധുത ബഹു: സുപ്രീംകോടതി ശരിവച്ചിട്ടുള്ളതാണ് **(Attorney General of India Vs Amaratlal Prajivandas (AIR1994SC2179).**

കോഫെപോസ നിയമം ഒരു ശിക്ഷാനിയമമല്ല അതുപോലെ ഈനിയമം മൂലം സിദ്ധിച്ചിട്ടുള്ള അധികാരം വിചാരണ കൂടാതെ ഒരു വ്യക്തിയെ ശിക്ഷിക്കാനുള്ള അധികാരവുമല്ല, രാജ്യസുരക്ഷയെയും സാമ്പത്തിക അടിത്തറയെയും ദോഷകരമായി ബാധിച്ചേക്കാവുന്ന കള്ളക്കടത്ത് പ്രവർത്തനങ്ങളിൽ നിന്നും ഒരു വ്യക്തിയെ തടയുന്നതിനായിട്ടാണ് ഈ നിയമം നിലകൊള്ളുന്നത്, അതിനായി കൃത്യമായതും പൂർണ്ണമായതുമായ നടപടിക്രമങ്ങൾ നിയമം നിഷ്കർഷിക്കുന്നുമുണ്ട്.

COFEPOSA

means

Conservation Of Foreign Exchange and Prevention Of Smuggling Activities



जापानी कार्टून चित्रकला

Japanese Cartoon Art



अनुपमा सूसन कोरुत, कक्षा -8, सुपुत्री रोसेलिंड जोस कोरुत, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी







